फरीदाबाद
# मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

**काम होगा तो मिलेंगे ही। मिलना तो बिना काम के होता है।**

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर 242 | 1/- | अगस्त 2008

# बद से बदतर होते हालात में

आज बड़ी सँख्या में मजदूर दो महीने यहाँ तो चार महीने वहाँ काम करने और रोज 12-16 घण्टे की ड्युटी करने को मजबूर हैं। किसानों और दस्तकारों की बढती सँख्या मजदूरों में बदल रही है। जहाँ एक मजदूर की जरूरत है वहाँ पचास लोग पंक्ति में खड़े हैं। और मित्रो, लक्षण तो निकट भविष्य में मजदूरों-मेहनतकशों की स्थिति और बिगड़ने के दिखते हैं। अस्थाई मजदूरों-कैजुअल वरकरों की सँख्या बढेगी। ठेकेदारों के जरिये मजदूर रखने की प्रथा और बढेगी।

ऐसे में क्या करें ? क्या-कुछ कर सकते हैं ? यह प्रश्न प्रत्येक के सम्मुख हैं, यह सवाल हम सब के सामने हैं।

## सब जो कर सकें

ऐसे कदमों की चर्चा काफी होती है जो आज सामान्य मजदूर के बस के नहीं हैं। इसलिये होता बहुत-ही कम है। इसका एक दुष्परिणाम हमारे द्वारा स्वयं को दोष देना और विलाप करना है। "न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी" वाली दलदल से निकलना प्रारम्भिक महत्व का है।

कदम तय करते समय यह ध्यान में रखना जरूरी है कि हर एक मजबूरियों से घिरी-घिरा है। फर्क मात्र यह है कि किसी की थोड़ी ज्यादा मजबूरी हैं तो किसी की थोड़ी कम मजबूरी हैं। एक-दूसरे को पीड़ित मान कर, सह-पीड़ित मान कर चलना आवश्यक लगता है। कदम स्वयं में बहुत-ही मामूली-से..... तिनकों समान। तिनकों से बनाया घोंसला सुरक्षा का मजबूत कवच बनता है। और, हर चिड़िया आसानी से तिनके उठा-जोड़ सकती है।

## हर जगह जो कर सकें

बदलते किराये के कमरे और अस्थाई नौकरियाँ हमारे लिये हकीकत का मुखर पहलू है। इसलिये आज पहली नजर में ही इस अथवा उस फैक्ट्री में स्थिति की बजाय एक क्षेत्र में हालात से हमारा वास्ता है। ऐसे में कदम तय करते समय यह देखना जरूरी है कि कदम ऐसे हों जो जगह-जगह पर उठाये जा सकें।

घर और पक्की नौकरी नहीं होना बेशक पीड़ा को बढाते हैं। परन्तु यह हमें एक नई धार भी देते हैं। हलाल करती, तिल-तिल जलाती कई बेड़ियों से हम मुक्त भी हो गये हैं। आज स्थाई मजदूरों में जो डर हैं उनके नाममात्र डर ही कैजुअल वरकरों और ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूरों में बचे हैं। "बहुत-ही मजबूर" और "कोई परवाह नहीं" का साथ-साथ होना ! निराशा और आशा साथ-साथ !!

दोस्तो, " पता लगते ही निकाल देंगे" की वास्तविकता हर जगह हमारे लिये ऐसे कदम आवश्यक बना देती है जो नजर में नहीं आयें। निशाना बनने से बचना बहुत-ही छोटे-छोटे कदमों की अनिवार्यता लिये है। वहीं, " खोने के लिये है ही क्या" वाली हकीकत इलाके-दर-इलाके उथल-पुथल लिये है..... और नई समाज रचना का आधार है।

## हर समय जो कर सकें

तीन साल-पाँच साल वाले तौर-तरीके आज साहबों के मनमाफिक हैं। कैजुअल वरकर, ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूर और मौत की देहली पर खड़े दस्तकार-किसान हर पल बेचैन हैं। वर्षो की बात छोड़िये, मजदूरों-मेहनतकशों के लिये आज एक-एक पल भारी है। मात्र बचे रहने के लिये भी हर समय कदम उठाना मजदूरों-मेहनतकशों के लिये बेहद जरूरी है।

हर समय कदम ..... पागल हो क्या ? इतने दबावों से घिरे हैं, इतने तनाव में रहते हैं कि कदम उठाने में निहित अतिरिक्त तनाव से बचने की कोशिश ही करते हैं। कोई कदम उठाया हुआ है तो उसे जल्दी-से-जल्दी खत्म करने की फिराक में रहते हैं। मित्रो, हमारे विचार से, यहाँ बात "कदम" के प्रचलित अर्थ से जुड़ी है। नेताओं वाले कदमों की बात छोड़िये। अपने अनुभवों, चर्चाओं और सोच-विचार द्वारा हमें ऐसे कदम ढूँढना-तय करते रहना है जो हर समय उठाये जा सकें। हालात तनी बन्दूकों के सम्मुख कदम उठाने के बन रहे हैं..... बहुत-ही सरल, बहुत-ही सहज कदम जो हर समय उठाये जा सकते हैं उनकी जरूरत हमारे लिये बढती लगती है।

हर समय विरोध करने से बचने के मजदूरों-मेहनतकशों के प्रयास बदतर होते हालात में घुटन को बढाते हैं, स्थिति विस्फोटक बनती जाती है। ऐसे में यहाँ-वहाँ, जब-तब धमाके होने ही हैं.... और, सरकारों के हाथों में " आतंकवाद" का अस्त्र-शस्त्र अधिक धारदार हो जाता है।

मित्रो, जनता में बढती बेचैनी से आज संसार में हर सरकार आतंकित है। मजदूरों-मेहनतकशों की हलचलों में वृद्धि से निपटने के लिये दुनियाँ-भर की सरकारें अपनी गिरोहबन्दियाँ बढा रही हैं। सब सरकारें "आतंकवाद" के खिलाफ एकजुट हो रही हैं.....

साम-दाम-दण्ड-भेद सरकारों का मूल मन्त्र है। अस्थिर होती सरकारें और भी कुटिल हो जाती हैं। थोड़ा पीछे जायें तो रूस के सम्राट ने 1905 में अपने चाचा का कत्ल करवा कर बेहद दमन को जायज ठहराने के लिये "आतंकवाद" में प्राण-प्रतिष्ठा की थी। इधर विश्व-भर में जिस आतंकवाद की चर्चा है उसका मुण्डन-संस्कार इटली सरकार के खुफिया विभागों ने चालीस वर्ष पहले भीड़ में बम विस्फोटों से किया था। आज सरकारों तथा उनके खुफिया विभागों की कारस्तानियाँ बढ गई हैं, और बढेंगी....

## इधर-उधर के लोग

दस्तकारों-किसानों की तबाही से बने मजदूर आज किसी क्षेत्र में सीमित नहीं हैं। विश्व-भर में आज मजदूर फैले हैं और भारी तादाद में हैं।

सरकारों द्वारा बनाई सीमाओं में मजदूर सैंकड़ों मील इधर से उधर आ-जा रहे हैं। सरकारों द्वारा बनाई सीमाओं के पार हजारों मील मजदूर आज इधर से उधर आ-जा रहे हैं।

विभिन्न स्थानों के लोग जगह-जगह एक-दूसरे के सम्पर्क में आ रहे हैं। एक जगह, एक जैसे हालात से कुछ समय साथ-साथ जूझते हैं। फिर नई जगह, नये लोग....

मजबूरों, पीड़ितों का यह मिलना इच्छा से मिलना नहीं होता। पराई जगह, अजनबी लोगों से घिरे होना "अपनों" की चाहत बढाता है। कई बार यह "अपने" बहुत संकीर्ण दायरे बनते हैं और "दूसरे"-"अन्य" को विरोधी-शत्रु मान कर साहबों के हथियार बन जाते हैं। परन्तु बात इतनी ही नहीं है।

जगह-जगह से लोगों का एक स्थान पर आना और फिर अन्य स्थानों को चल देना मजदूरों के अनुभवों तथा विचारों का आदान-प्रदान व फैलाव लिये है। भाषा व अन्य अवरोधों को लाँघ कर साँझे कदम उठाने की आवश्यकता पुराने "अपनों" के स्थान पर नये "अपनों" की माँग कर रही है। स्वयं को मजदूर के तौर पर, स्वयं को मनुष्य के तौर पर देखना.....

दोस्तो, बद से बदतर होते हालात में इस दुनियाँ की जगह नई दुनियाँ बनाने की जरूरत बढ रही है। अपने लिये बेहतर आज और सुन्दर कल के लिये आईये अपने प्रयास बढायें।■

# कानून हैं शोषण के लिये छूट है कानून से परे शोषण की

**कानून :● 37.40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7-10 तारीख तक दे ही देना; ● 8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगुनी दर से; ●** प्रतिदिन 8 घण्टे *काम और सप्ताह में एक दिन की छुट्टी पर 01.01.2008 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा प्रतिमाह इस प्रकार हैं: अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3586 रुपये (8 घण्टे के 138 रुपये); अर्धकुशल अ 3716 रुपये (8 घण्टे के 143 रुपये); अर्धकुशल ब 3846 रुपये (8 घण्टे के 148 रुपये); कुशल श्रमिक अ 3976 रुपये (8 घण्टे के 153 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4106 रुपये (8 घण्टे के 158 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4236 रुपये (8 घण्टे के 163 रुपये)। कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है।*

**सेन्डेन विकास मजदूर :** " प्लॉट 65 सैक्टर-27 ए स्थित फैक्ट्री में तीन ठेकेदारों के जरिये रखे हम 600 मजदूर काम करते हैं – स्थाई मजदूर 65 हैं और कैजुअल वरकर कोई नहीं है। हमें जून की तनखा में महँगाई भत्ते के 50 रुपये ही दिये जबकि 76 रुपये देय हैं तथा जनवरी से मई की डी.ए. की राशि दी ही नहीं। और, पहली जून से कम्पनी ने हमारे लिये कैन्टीन में थाली 35 रुपये में कर दी है! इससे पहले हमें थाली 15 रुपये में देते थे। स्थाई मजदूरों को पहली जून से थाली 5 की जगह 10 रुपये में की है। स्थाई मजदूरों की तनखा 12000-18000 रुपये है जबकि हम में हैल्परों को जून की तनखा 3560 रुपये और आई टी आई कियों को 3820 रुपये दी।

" सेन्डेन विकास फैक्ट्री में लगातार खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। सुबह 6½ बजे काम आरम्भ करने वाले आमतौर पर साँय 7 तक काम करते हैं। सुबह 9 वाले रात 9½-10½ तक और दोपहर 3 वाली शिफ्ट को अगले रोज सुबह 4½-5½-6½ तक रोकते हैं। महीने में हमारा 150 घण्टे तक ओवर टाइम हो जाता है और इसका भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से करते हैं। लगातार 15 घण्टे काम करवाते हैं तब भी रोटी के लिये पैसे नहीं देते। हमें वर्दी देते हैं पर जूते नहीं देते और फैक्ट्री में प्रवेश के लिये जूते अनिवार्य हैं। ठेकेदारों में सुपिरियर कम्पनी ने तो दो साल से काम कर रहों को भी ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं और छोड़ने पर फण्ड निकालने का फार्म नहीं भरती।"

**हरि ओम प्रिसिजन टूल्स श्रमिक :** "20 इन्डस्ट्रीयल एरिया (ढाँढा कम्पलैक्स) स्थित फैक्ट्री में 8 महिला और 30 पुरुष मजदूर काम करते हैं। पावर प्रेस चलाती 2-3 महिला मजदूरों की तनखा 2400-2500 और बाकी की 1900-2000 रुपये। पुरुष हैल्परों की तनखा 2000-2400 और ऑपरेटरों की 2800-3000 रुपये। ई.एस.आई. 10 मजदूरों की ही, पी. एफ. किसी की नहीं। एक्सीडेन्ट होते रहते हैं – मई में एक बन्दे के दोनों अँगूठे कटे और फिर जिसकी तीन उँगलियाँ पहले ही कटी थी उसका एक अँगूठा कट गया। फैक्ट्री में 14 पावर प्रेस हैं और उन पर मात्र 3 पँखे हैं – मजदूर सुबह से रात तक पसीने में भीगे रहते हैं। कहने पर जवाब मिलता है – 'जहाँ पँखे हैं वहाँ जाओ'। महिला व पुरुष मजदूरों के लिये मात्र एक टॉयलेट है और वह भी अक्सर गन्दे पानी से भर जाता है। ड्युटी सुबह 8½ से रात 9 तक। जब काम कम होता है तब 7 बजे छोड़ देते हैं पर तब चाय-मट्ठी नहीं देते। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

**एस पी एल इन्डस्ट्रीज कामगार :** "प्लॉट 22 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में एक ठेकेदार के जरिये हम 320 मजदूरों को 8 लाइनों पर काम करने के लिये रखा गया है। हमारी 12 घण्टे की ड्युटी है। हम में हैल्परों की तनखा 2600-2800 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सिलाई कारीगर पीस रेट पर और पीस रेट ठेकेदार घटाता रहता है। और फिर, कम्पनी दस्तावेजों में ठेकेदार को जहाँ 5 रुपये प्रति पीस देना दिखाती है वहाँ ठेकेदार सिलाई कारीगरों को 2½ रुपये प्रति पीस देता है। तनखा हर महीने देरी से, जून का वेतन हमें आज 18 जुलाई तक नहीं दिया है। तनखा में से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड दस प्रतिशत मजदूरों ने लड़-झगड़ कर लिये हैं, नब्बे प्रतिशत को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं।"

**डी एस बुहिन वरकर :** "प्लॉट 88 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 22 स्थाई मजदूर तथा 200 कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्पर कैजुअल हों-चाहे ठेकेदारों के जरिये रखे, तनखा 2400 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ठेकेदारों के जरिये रखे ऑपरेटरों की तनखा 2800-3000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

**बाटा मजदूर :** "चटपट में कम्पनी 130-35 स्थाई मजदूरों की नौकरी खा गई है। हड़बड़ाहट में इस्तीफे देने वाले मजदूरों द्वारा इस्तीफे वापस लेने के लिये इस-उस की चिरौरी करना और भी दुख की बात रही है। यह उसी बाटा फैक्ट्री में हुआ है जिसमें बीस-पचीस वर्ष तक अनेक हथकन्डों के बावजूद झटके में मजदूरों की छँटनी कम्पनी नहीं कर पाई थी। बाटा मैनेजमेन्ट ने छँटनी के लिये यूनियन के साथ कई समझौते किये, सेमी-ऑटोमैटिक की जगह ऑटोमैटिक लाइनें लगाई, वी आर एस लगाई, आठ महीने तालाबन्दी की, नई कम्पनी बना उसे यह फैक्ट्री 'बेची'..... पर बाटा मजदूर अब तक सब फन्दों को काटते आये थे। यह मजदूरों का अनोखा विरोध था जिसने कम्पनी को ऑटोमैटिक लाइनें उखाड़ कर फिर से सेमी-ऑटोमैटिक लाइनें लगाने को मजबूर किया था। धीमी छँटनी, रिटायर होने वालों की जगह नई भर्ती नहीं करना और अधिक से अधिक काम को फैक्ट्री से बाहर भेजना ऐसे में कम्पनी की नीति रही। जूते-चप्पल बाहर से पैक हो कर ट्रकों में बाटा फैक्ट्री में आते हैं और यहाँ से सीधे गोदामों में भेज दिये जाते हैं!

"असल में यह चौतरफा माहौल है जिसने स्थाई मजदूरों को बहुत कमजोर किया है। आज प्रत्येक स्थाई मजदूर बेहद चिन्तित है, सब परमानेन्ट वरकर डर से मरे जा रहे हैं। बाटा कम्पनी ने इसी को भुनाने के लिये प्रचार किया कि हवाई चप्पल अब बनायेंगे ही नहीं क्योंकि इन में घाटा होता है। हवाई चप्पल की तीन लाइनें बन्द कर दी। फिर फीते-बद्धी और शीट बनाने वाली प्रेसें तथा उनके लिये माल तैयार करते मिक्सर-रोलर बन्द कर दिये। मजदूरों को जूते बनाने की लाइनों पर भेज दिया – जहाँ एक की जरूरत थी वहाँ 2-3-4 खड़े कर दिये। (अब तक जूतों में घाटा बता कर कम्पनी मजदूरों को हवाई चप्पल लाइनों पर भेजती थी।) और फिर मैनेजमेन्ट ने वी.आर.एस. लगा दी। मजदूरों को पटाने के लिये परसनल मैनेजर ने फोरमैनों को पैसे दिये। ज्यादा डरे-हड़बड़ाये मजदूरों को दारू पिला कर फोरमैन उन्हें परसनल मैनेजर के पास ले गये। वी आर एस दो सप्ताह के लिये लगाई थी, उसे एक हफ्ते बढा कर 135 स्थाई मजदूरों की इस प्रकार नौकरी समाप्त कर दी गई – अब यहाँ बाटा फैक्ट्री में 350 से कम स्थाई मजदूर बचे हैं। इधर प्रेसें और मिक्सर-रोलर फिर शुरू कर दिये हैं – ठेकेदार के जरिये 50 मजदूर काम पर लगा लिये हैं। हवाई चप्पल लाइनें चलाने की चर्चा है।"

**सेक्युरिटी गार्ड :** "कृष्णा कॉलोनी, सैक्टर-25 में कार्यालय वाली **एशियन सेक्युरिटी** गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करवाती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के 3000 रुपये और पैसे 14 तारीख के बाद।"

**मैनी कन्सट्रक्शन मजदूर :** "प्लॉट 67-68 गली नं. 7 सरूरपुर गाँव स्थित फैक्ट्री में 200 मजदूर शटरिंग का काम करते हैं। तनखा 2500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

**शुभ कम्पोनेन्ट्स श्रमिक :** "30 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 8½ की शिफ्ट है और फिर पूरी रात रोक लेते हैं जिसके बाद फिर पूरे दिन की ड्युटी के बाद रात 8½ बजे छूटते हैं। महीने में 12-13 बार इस प्रकार लगातार 36½ घण्टे फैक्ट्री में काम करवाते हैं। जबरन रोकते हैं। कोई छुट्टी नहीं। महीने में 250-275 घण्टे ओवर टाइम और उसके पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2000- **(बाकी पेज तीन पर)**

## कानून हैं शोषण के लिये..(पेज दो का शेष)

2200 और ऑपरेटरों की 3000 रुपये। डाई फिटरों को 3500-4000 रुपये। फैक्ट्री में 10 पावर प्रेस हैं और उँगली कटती रहती हैं। चालीस से अधिक मजदूरों में 2 की ही ई.एस.आई. है, बाकी स्टाफ वालों की होगी। उँगली कटने पर निजी चिकित्सकों के पास कभी सैक्टर-22 में तो कभी एन एच-5 में भेज देते हैं। फैक्ट्री में **मारुति सुजुकी** का काम होता है और कम्पनी ने दूसरी फैक्ट्री सैक्टर-58 में बना ली है।"

**हिन्दुस्तान विद्युत प्रोडक्ट्स कामगार :** "12/1 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 180 स्थाई मजदूरों की 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट हैं और ठेकेदारों के जरिये रखे 200 से ऊपर वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों को 12 घण्टे रोज काम पर 30 दिन के 4000 रुपये। स्थाई मजदूरों के साथ कम्पनी का त्रिवर्षीय समझौता सितम्बर 06 में निर्धारित था पर 23 महीने बीतने के बाद भी नहीं किया है।"

**सुदीप प्लेटिंग वरकर :** "प्लॉट 239 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1800-2000 रुपये। गैस बहुत लगती है।"

**ए.पी. प्रोसेस मजदूर :** "प्लॉट 103 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। हैल्परों को 12 घण्टे के 110 रुपये और कारीगरों को 130 रुपये। फैक्ट्री में कपड़ों की रँगाई होती है और बॉयलर में तेल लगे कपड़े तथा लखानी शूज का कबाड़ जला कर भारी प्रदूषण फैलाते हैं।"

**सूपर सेरेमिक्स श्रमिक :** " प्लॉट 48 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे 150 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2600-2700 और ऑपरेटरों की 3000 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।" **सेन ऑटो कामगार :** "प्लॉट 70 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 100 स्थाई तथा 200 कैजुअल वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। कैजुअलों की तनखा 2700-3000 रुपये, आई टी आई वालों की 3000-4000 रुपये, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कैजुअल वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। दिन के 12 घण्टे में एक चाय देते हैं पर रात के 12 घण्टे में वह भी नहीं।" **अल्पाइन एपरेल्स वरकर :** " प्लॉट 18 सैक्टर-27 ए स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ने 10 घण्टे = 8 घण्टे कर रखा है।"

**सूपर स्क्रू मजदूर :** " प्लॉट 96 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ने 10 घण्टे = 8 घण्टे कर रखा है।" **हरियाणा ग्लोबल श्रमिक :** " 5 बी, 20/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में सुबह 8½ से रात 8 की शिफ्ट है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2200 और ऑपरेटरों की 2800-3000 रुपये। कम्पनी ने स्वयं 4-5 भर्ती किये हैं और पाँच-छह सौ मजदूरों को एक ठेकेदार के जरिये रखा है। पेशाब करने जाने के लिये टोकन लो!" **जय इंजिनियरिंग कामगार :** " प्लॉट 327 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2000 और ऑपरेटरों की 2200-2500 रुपये। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 80 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 7-8 की ही हैं। बड़ी चोट लगने पर कम्पनी सैक्टर-23 में अग्रवाल नर्सिंग होम ले जाती है।"

**वेल्डन सेलो प्लास्ट मजदूर :** " प्लॉट 92 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में जून की तनखा आज 16 जुलाई तक नहीं दी है। कई महीनों के ओवर टाइम के पैसे बकाया हो गये हैं।"

**'गेट पर नाम नहीं' श्रमिक :** " प्लॉट 1385 गली नं. 17 संजय कॉलोनी, सैक्टर-23 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को रोज 8 घण्टे पर 30 दिन के 2000 रुपये और सिलाई कारीगरों को 3000 रुपये। फैक्ट्री में 60-70 मजदूर हैं पर ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।" **जिन्दल रैक्टिफायर कामगार :** " प्लॉट 195 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों में हैल्परों की तनखा 2500 तथा ऑपरेटरों की 3510 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। जनवरी से देय महँगाई भत्ते के 76 रुपये कम्पनी ने स्थाई मजदूरों को भी नहीं दिये हैं।" **पूजा मैटल वरकर :** " प्लॉट 109 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों की तनखा 2500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

**पूजा फोर्ज मजदूर :** "14/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

**वेस्टन श्रमिक :** " प्लॉट 98 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2400 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

**स्टेरिवेयर कामगार :** " प्लॉट 60 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2300-3000 रुपये। प्लास्टिक मोल्डिंग का काम है, गर्म काम है और हैल्पर मशीनें भी चलाते हैं। फैक्ट्री में 50 मजदूर हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 10 की ही हैं। शिफ्ट 12 घण्टे की और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

**एच.जे. इंजिनियरिंग वरकर :** " प्लॉट 352 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में जून की तनखा आज 15 जुलाई तक नहीं दी है, हर महीने वेतन देरी से देते हैं, 28-30 तारीख को जा कर देते हैं। फैक्ट्री में हम मजदूरों के पीने के लिये पानी खारा।"

## कुछ पते

**25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिए**

1. श्रम मन्त्री, भारत सरकार
श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग नई दिल्ली–110001
2. केन्द्रीय भविष्य निधि आयुक्त
14 भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली–110066
3. क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त, भविष्य निधि भवन, सैक्टर-15ए, फरीदबाद–121007
4. उप-क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त
प्लॉट 43, सैक्टर-44, गुड़गाँव – 122002
5. क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त (दक्षिणी दिल्ली)
60 स्काईलार्क बिल्डिंग, पाँचवीं मंजिल
नेहरु प्लेस, नई दिल्ली – 110019

## दिल्ली से..(पेज चार का शेष)

सिंगल रेट से। मैटल पॉलिश विभाग में काम करते 52 मजदूरों में 4-5 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं।"

**सोना प्रिन्टिंग प्रेस श्रमिक :** " एफ-86/1 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500 और ऑपरेटरों की 4000-7000 रुपये। हैल्पर ऑपरेटर का काम भी करते हैं। फैक्ट्री में काम करते 250 मजदूरों में 150 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। छपाई विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और बाकी विभागों में 12 घण्टे की एक शिफ्ट। काम ज्यादा होता है तब सब मजदूरों को 36 घण्टे लगातार रोक लेते हैं और रोटी के लिये 40 रुपये देते हैं। बारह घण्टे की ड्युटी में 3 घण्टों को ओवर टाइम कहते हैं और 4 घण्टों के पैसे देते हैं पर डबल की बजाय सिंगल रेट से।"

**लिलिपुट किड्स वीयर कामगार :** "एक्स-59 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में एक हजार मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 100 मजदूरों के भी नहीं हैं। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर तीस दिन के 2800-3635 रुपये देते हैं। सिलाई कारीगरों में पुरुष मजदूरों को 18 रुपये प्रति घण्टा और महिला मजदूरों को 17 रुपये प्रति घण्टा देते हैं। सुबह 9 से रात 9 की एक शिफ्ट है। फैक्ट्री में कैन्टीन थी पर उसे बन्द कर कम्पनी वहाँ कपड़ों की धुलाई करवाने लगी है।"

**ग्रे प्रिन्टर्स वरकर :** " सी-15 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 90 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 10 के ही हैं। छपाई मशीनों पर हैल्परों की तनखा 1800 रुपये और ऑपरेटरों की 10,000-25,000 रुपये। लेमिनेशन में हैल्परों की तनखा 1800-2000 और डाई कटिंग में 3000 रुपये। एक शिफ्ट सुबह 9½ से रात 9 की है और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ओवर टाइम का महीना 16 से 16 तारीख का बना कर प्रत्येक मजदूर के ओवर टाइम में हर महीने 20-25 घण्टों की गड़बड़ी करते हैं। फैक्ट्री में गेट पर कोई मिलने आ गये तो मिलने नहीं देते। छोड़ने पर किये काम के पैसे मुश्किल ही देते हैं।"

6. क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त (उत्तरी दिल्ली)
28 वजीरपुर इन्डस्ट्रीयल एरिया
नई दिल्ली–110052
7. महानिदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, कोटला रोड़, नई दिल्ली-110002
8. क्षेत्रीय निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन, सैक्टर-16, फरीदाबाद– 121002 (पूरे हरियाणा के लिये)
9. क्षेत्रीय निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, डी.डी.ए. एस.सी.ओ., राजेन्द्रा प्लेस, नई दिल्ली-110008 (दिल्ली क्षेत्र के लिये);
10. श्रीमान श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार
30 वेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ
11. श्रीमान श्रम मन्त्री,
हरियाणा सचिवालय चण्डीगढ
12. श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार
5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली–110054

# गुड़गाँव से -

**ईस्टर्न मेडिकिट मजदूर :** " प्लॉट 195, 196, 205, 206, 207 उद्योग विहार फेज-1 तथा प्लॉट 292 फेज-2 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में हम कैजुअल वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। जून माह की तनखा हम में से कुछ को 24-25 जुलाई को दी और बाकी को 1000 रुपये 'एडवान्स' के नाम से दिये तथा बकाया तनखा 30 जुलाई को देने की बोले हैं। जनवरी माह से देय महँगाई भत्ते के 76 रुपये हमें नहीं दिये हैं। ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से देने की बजाय मात्र 13-14 रुपये प्रति घण्टा देते हैं और जून में किये ओवर टाइम के यह पैसे भी आज 29 जुलाई तक नहीं दिये हैं।

" ईस्टर्न मेडिकिट की कैन्टीनों में भोजन खराब है। कूपन पर 8 रुपये में थाली देते हैं पर हम कैजुअल वरकरों को कूपन मुश्किल से मिलते हैं और बिना कूपन पर थाली 17 रुपये में देते हैं। भोजन अवकाश के समय कैन्टीन के बाहर खड़े होने पर परसनल वाले गाली देते हैं, मारपीट पर उतर आते हैं। तनखा-ओवर टाइम-भोजन-काम के भारी बोझ के बार में साहबों को मुँह पर बोलने पर नौकरी से निकाल देते हैं और किये काम के पैसे 4 महीने बाद देते हैं। छह महीने होने पर तो निकाल ही देते हैं। हम कैजुअल वरकरों की पेन्शन नहीं है पर पेन्शन के नाम पर भविष्य निधि संगठन हमारे फण्ड के एक हिस्से को खा रहा है।"

**ग्राफ्टी एक्सपोर्ट श्रमिक :** " प्लॉट 377 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 400 से अधिक मजदूर थे पर इस समय 100 ही हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं रखे हैल्परों को 8 की बजाय 10 घण्टे ड्युटी पर महीने के 3510 रुपये। इसी प्रकार कारीगरों को 8 की बजाय 10 घण्टे पर महीने के 3640 रुपये। ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2800-2900 और प्रेसमैन की 3000-3200 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

**के.आर.एफ. कामगार :** " प्लॉट 403 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1900 और कारीगरों की 2500-6000 रुपये। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। चार-पाँच सौ मजदूर हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 100-200 की ही हैं। कैन्टीन नहीं है और कम्पनी 12 घण्टे में एक कप चाय भी नहीं देती, साहब लोग गाली देते हैं।"

**कँचन इन्टरनेशनल वरकर :** " प्लॉट 872 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में हम 150 थे, अब 40-50 बचे हैं। जो तनखा पर हैं उन्हें अप्रैल, मई और जून की तनखायें आज 29 जुलाई तक नहीं दी हैं। सिलाई कारीगर पीस रेट पर और पैसे सप्ताह पर, शनिवार से शनिवार देते थे पर इधर 3 हफ्ते का भुगतान नहीं किया है। मकान मालिक और राशन देने वाला दुकानदार परेशान करते हैं पर कम्पनी है कि काम करो, पैसे मत माँगो..... ज्यादा कहने पर मारने दौड़ते हैं। नौकरी छोड़ने-हिसाब माँगने पर मना कर देते हैं।"

**सेक्युरिटी गार्ड :** "पीरागढी, दिल्ली में कार्यालय वाली **प्रिमियम सेक्युरिटी** कम्पनी यहाँ गुड़गाँव में गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। रोज 12 घण्टे ड्युटी पर 30 दिन के 4500 रुपये। काम करते तीन महीने हो जाते हैं तब ई.एस.आई. व पी.एफ. लागू करते हैं।"

**स्पार्क मजदूर :** "प्लॉट 166 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में जून की तनखा 28 जुलाई को दी और जून में किये ओवर टाइम के पैसे आज 29 जुलाई तक नहीं दिये हैं। सुबह 9 से रात 8 तक रोज रोकते हैं, रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के महीने में 200 घण्टे हो जाते हैं, भुगतान सिंगल रेट से। फैक्ट्री में एक हजार के करीब मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 10-15 की ही हैं।"

**निओलाइट श्रमिक :** " प्लॉट 396 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में रोज सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी है। कम्पनी ने स्वयं 50-60 मजदूर रखे हैं और 350 को दो ठेकेदारों के जरिये रखा है। ठेकेदारों के जरिये रखों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं पर ओवर टाइम के पैसे मात्र 10 रुपये प्रति घण्टा के हिसाब से देते हैं।"

**सुन्दरी एपरेल्स कामगार :** "प्लॉट 643 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में कोट-पैन्ट बनाते 350 मजदूरों में किसी की भी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं, स्टाफ की हों तो पता नहीं। हैल्परों की तनखा 2500 और कारीगरों की 3500-4300 रुपये। ड्युटी सुबह 9½ से रात 7½-8½ तक और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

**गौरव इन्टरनेशनल वरकर :** " प्लॉट 198, 208, 225 उद्योग विहार फेज-1 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से था पर पहली जून से प्रतिदिन के 2 घण्टे ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से ही पर उन से अधिक ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से कर दिये हैं। कम्पनी रोज सुबह 9 से रात 11½ तक ड्युटी करवाती है – रविवार को 8 घण्टे ड्युटी। जबरन ओवर टाइम करवाते हैं, मना करने पर 'कल से मत आना, हिसाब लो' और गाली देते हैं। जबरन 14½घण्टे ड्युटी में रोटी के पैसे भी नहीं देते।"

**'कम्पनी का नाम याद नहीं' मजदूर :** "प्लॉट 662 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री 28 जून को बन्द कर दी पर एक ठेकेदार के जरिये रखे हम 6 मजदूरों को जून की तनखा आज 29 जुलाई तक नहीं दी है।"

**लारा एक्सपोर्ट श्रमिक :** " प्लॉट 155 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 250 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 10-11 की ही हैं। तीन-चार साल से काम कर रहों की भी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं।"

## अनुरोध

फरीदाबाद में 10-12 जगह और ओखला (दिल्ली) तथा उद्योग विहार (गुड़गाँव) में 'मजदूर समाचार' बाँटने में हमें हर महीने 15 दिन लगते हैं। बाँटने में सहायता की जरूरत है। अपनी सुविधा अनुसार आप एक अथवा अधिक स्थानों पर 'मजदूर समाचार' बँटवाने में सहयोग कर सकते हैं। स्थान तथा दिन के बारे में हम से सम्पर्क करें।

'मजदूर समाचार' के कोई संवाददाता नहीं हैं। समय हो तो अखबार लेते समय अपनी बातें बतायें। पहले से लिख कर रखी सामग्री दें या फिर पत्र डालें।

हमारा प्रयास 'मजदूर समाचार' की महीने में 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का है। इच्छा अनुसार रुपये-पैसे के योगदान का स्वागत है।

**डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,**
**आटोपिन झुग्गी,**
**एन.आई.टी फरीदाबाद – 121001**

## बीमार करती दवा

संसार में दवाईयों की खपत तीव्र गति से बढ रही है। विश्व में थोक में औषधि निर्माण का एक प्रमुख क्षेत्र भारत है।

एक अध्ययन में औषधि निर्माता फैक्ट्रियों के निकट वाले गाँवों में कैन्सर की दर दूर वाले गाँवों से ग्यारह गुणा ज्यादा पाई गई है।

## .. और बीमार करता भोजन

फैक्ट्री में माल की तरह मुर्गी-सूअर-गाय को तैयार करना इनके माँस को विषैला बनाने की सम्भावना को बहुत बढा देता है।

(जानकारी "सोशलिस्ट स्टैन्डर्ड" के अगस्त 08 अंक में Stan Cox की पुस्तक, Sick Planet : Corporate Food and Medicine की समीक्षा से।)

# दिल्ली से -

*01.02.2008 से **दिल्ली में** सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार हैं : 8 घण्टे की ड्युटी और सप्ताह में एक छुट्टी पर महीने के अकुशल श्रमिक (हैल्पर) को 3633 रुपये (8 घण्टे के 140रुपये); अर्ध-कुशल मजदूर की कम से कम तनखा 3799 रुपये (8 घण्टे के 146 रुपये); कुशल श्रमिक का कम से कम वेतन 4057 रुपये (8 घण्टे के 156रुपये)।*

**सीमा ओवरसीज मजदूर :** " बी-2/46 मोहन कोऑपरेटिव इन्डस्ट्रीयल एस्टेट, बदरपुर स्थित फैक्ट्री में काम करते 250 मजदूरों में 5-6 ही कम्पनी ने स्वयं रखे हैं और बाकी सब को चार ठेकेदारों के जरिये रखा है। हैल्परों की तनखा 2000-2200 रुपये, कुछ 10-12 वर्ष पुरानों की 4500 रुपये। रोज सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट है और रात 12, 2 बजे, सुबह 4 तक रोक लेते हैं। महीने में 150 घण्टे तक ओवर टाइम और भुगतान दुगुनी दर की बजाय **(बाकी पेज तीन पर)**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011